पाठ - माता का आँचल

शब्दार्थ –

1. **मृदंग** – एक तरह का वाद्य यंत्र
2. **तंग** – जिसमें उचित व आवश्यक विस्तार का अभाव हो
3. **तड़के** – सुबह के समय, सवेरे-सवेरे, भोर में
4. **निबट** – समाधान, समायोजन, निर्णय
5. **बैठक** – सभा, बैठने का कमरा, चौपाल, उठने और बैठने की कसरत
6. **भभूत** – वह भस्म जिसको शिव भक्त शरीर पर लगाते हैं, यज्ञ कुंड या धूनी की भस्म
7. **दिक** – जिसे कष्ट पहुँचा हो, परेशान, हैरान, पीड़ित, तंग आया हुआ, अस्वस्थ, बीमार
8. **झुँझलाकर** – क्रुद्ध या व्यथित होकर कोई बात कहना, खीजना, चिड़चिड़ाना, चिढ़ना, बिगड़ना
9. **लिलार** – ललाट, माथा, मस्तक, भाल
10. **त्रिपुंड** – एक प्रकार का तिलक जिसमें ललाट पर तीन आड़ी या अर्धचंद्राकार रेखाएँ बनाई जाती हैं
11. **जटाएँ** – सिर के बहुत लंबे, उलझे, आपस में चिपके या गुथे हुए बाल
12. **रमाने** – लगाना
13. **निहारा** – देखा
14. **रामनामा बही** – सिली हुई मोटी कॉपी जो हिसाब लिखने के काम आती है
15. **पोथी** – बड़ी पुस्तक, कागज़ों की गड्डी
16. **विराजमान** – बैठा हुआ, आसीन, विराजित
17. **शिथिल** – जो अच्छी तरह बँधा, कसा या जकड़ा हुआ न हो, ढीला, कमज़ोर, निर्बल, थका हुआ
18. **पछाड़** – कुश्ती का एक दाँव, किसी शोक के कारण बेसुध होकर ज़मीन पर गिर पड़ना, मूर्छित होना
19. **उतान** – पीठ के बल लेटना
20. **चौके** – पत्थर का चौकोर टुकड़ा, चौकोर ज़मीन, चौकोर कटा हुआ कोई ठोस या भारी टुकड़ा, वह स्थान जहाँ भोजन तैयार किया जाता है
21. **सानकर** – मिलाना, लपेटना, गूँधना
22. **अफर** – भर पेट से अधिक खा लेना
23. **हठ** – किसी बात के लिए अड़ना, ज़िद, किसी बात पर अड़े रहने की प्रवृत्ति
24. **कौर** – रोटी का एक टुकड़ा, ग्रास, निवाला
25. **ठौर** – स्थान, अवसर
26. **मरदुए** – नर, पुरुष
27. **महतारी** – माता
28. **काठ** – वृक्ष का कोई स्थूल अंग जो कटकर सूख गया हो, लकड़ी, काष्ठ

egyanarchive

29.**चुल्लू कड़वा तेल** – सरसों का तेल
30.**बोथकर** – सराबोर कर लेना
31.**उबटकर** – बुरा, विकट
32.**बाट** – रास्ता
33.**जोहनेवाला** – देखने वाला
34.**हमजोलियों** – जो प्रायः साथ रहते हों, साथी, सखा
35.**तमाशे** – करतब
36.**सरकंडे** – एक पौधा जिसके तने में गाँठें होती हैं
37.**चँदोआ** – छोटा शामियाना
38.**ठीकरों** – मिट्टी के टूटे-फूटे बरतन का टुकड़ा
39.**बटखरे** – तौलने के लिए कुछ निश्चित मान या तौल का पत्थर आदि का टुकड़ा; बाट
40.**जस्ते** – एक नरम धातु जो मटमैले रंग की होती है
41.**किवाड़** – दरवाजे
42.**मुँहड़े** – ऊपरी हिस्सा
43.**कड़ाही** – लोहे, पीतल आदि धातु का छोटे आकार का कड़ाहा
44.**आचमनी** – आचमन करने का एक छोटा चम्मच
45.**ज्योनार** – भोज, दावत
46.**पंगत** – पाँत, पंक्ति
47.**पाँत** – पंक्ति
48.**जीमने** – भोजन करना
49.**कनस्तर** – टीन का बना हुआ चौकोर आकार का एक पात्र जिसमें घी, तेल, आटा आदि रखा जाता है, पीपा
50.**तंबूरा** – सितार की तरह का तीन तारों वाला एक बाजा जो स्वर में संगति देने के लिए बजाया जाता है, तानपूरा
51.**अमोले** – आम का उगता हुआ पौधा
52.**कुल्हिए** – छोटा पुरवा, छोटा कुल्हड़
53.**कलसा** – पानी रखने का बड़ा घड़ा, जो मिट्टी या धातु का बना होता है
54.**खटोली** – छोटी चारपाई या खाट
55.**ओहार** – परदे के लिए डाला हुआ कपड़ा
56.**उघारकर** – ढकने या रोकने वाली वस्तु हटाना
57.**घिरनी** – चरखी, गराड़ी, चक्कर, फेरा, लट्टू नामक खिलौना
58.**चुक्कड़** – कुल्हड़, पुरवा, मिट्टी का पकाया गया छोटा बर्तन जिसमें चाय, पानी आदि पिया जाता है
59.**जुआठा** – गाय, बैल, भैंस आदि के मुँह पर बाँधी जाने वाली जाली

egyanarchive

60.**कसोरे** – मिट्टी से बना छिछला कटोरा

61.**रहरी** – अरहर

62.**मेहरी** – पत्नी, जोरू

63.**खसूट-खब्बीस** – क्रूर-गंदा

64.**बरखा** – बारिश

65.**अँठई** – छोटे छोटे कीड़े जो प्रायः कुत्तों के बदन में चिपटे रहते हैं

66.**चिरौरी** – दीनतापूर्वक की जाने वाली प्रार्थना, विनती

67.**मकई** – मक्की

68.**ओसारे** – मकानों में निर्मित बरामदा जो आँगन में या घर के बाहर खुलता हो, दालान

69.**अमनिया** – शुद्ध, साफ

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी, अत्यधिक ममता और माँ की गोदी की जरूरत थी। उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती थी, उतनी पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी याद आती है, बाप या नाना नहीं। माँ का लाड़ घाव को भरने वाले मरहम का काम करता है।

egyanarchive

प्रश्न 2. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- शिशु अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रुचि लेता है। उनके साथ खेलना अच्छा लगता है। अपनी उम्र के साथ जिस रुचि से खेलता है वह रुचि बड़ों के साथ नहीं होती है। दूसरा कारण मनोवैज्ञानिक भी है-बच्चे को अपने साथियों के बीच सिसकने या रोने में हीनता का अनुभव होता है। यही कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 3. आपने देखा होगा कि भोलानाथ और उसके साथी जब-तब खेलते-खाते समय किसी न किसी प्रकार की तुकबंदी करते हैं। आपको यदि अपने खेलों आदि से जुड़ी तुकबंदी याद हो तो लिखिए।

उत्तर-

तुकबंदी:

कबड्डी-कबड्डी खेलेंगे,
मिलकर सबको हराएंगे।
गिरेंगे भी, उठेंगे भी,
फिर हँसते-हँसते दौड़ेंगे भी।
हाथ पकड़ो, जोर लगाओ,
जीत के नारे खूब लगाओ।

प्रश्न 4. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आज के हमारे खेलों और सामग्री से बहुत अलग थी। भोलानाथ के समय में बच्चे खुलकर खेलते थे। तब परिवार और पड़ोस में गहरा अपनापन था, इसलिए खेलने में कोई डर नहीं था। बच्चे अपनी खेल की चीजें खुद बनाते थे — जैसे घर की बेकार चीजों से। वे मिट्टी और धूल में खेलकर भी बहुत खुश रहते थे। न कोई डर होता था, न ही बड़ों की सख्त निगरानी।
आज के समय में खेल और खेलने की सामग्री बदल गई है। अब खेल का सामान बाजार से खरीदा जाता है। खेलने का समय भी तय होता है और हर समय बड़ों की देखरेख रहती है। बच्चे अब मिट्टी या धूल में खेलते भी नहीं हैं। इस तरह भोलानाथ के समय में खेलों में जो आज़ादी और खुशी थी, वह आज कम हो गई है।

प्रश्न 5. पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?

उत्तर- पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब एक साँप सब बच्चों के पीछे पड़ जाता है। तब वे बच्चे किस प्रकार गिरते-पड़ते भागते हैं और माँ की गोद में छिपकर सहारा लेते हैं-यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है। |
इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष रूप से बच्चे के पिता का मित्रता पूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

प्रश्न 6. इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।

उत्तर- आज की ग्रामीण संस्कृति को देखकर और इस उपन्यास के अंश को पढ़कर ऐसा लगता है कि कैसी अच्छी रही होगी वह समूह-संस्कृति, जो आत्मीय स्नेह और समूह में रहने का बोध कराती थी। आज ऐसे दृश्य दिखाई नहीं देते हैं। पुरुषों की सामूहिक-कार्य प्रणाली भी समाप्त हो गई है। अतः ग्रामीण संस्कृति में आए परिवर्तन के कारण वे दृश्य नहीं दिखाई देते हैं जो तीस के दशक में रहे होंगे-

1. आज घर सिमट गए हैं। घरों के आगे चबूतरों का प्रचलन समाप्त हो गया है।

2. आज परिवारों में एकल संस्कृति ने जन्म ले लिया, जिससे समूह में बच्चे अब दिखाई नहीं देते।
3. आज बच्चों के खेलने की सामग्री और खेल बदल चुके हैं। खेल खर्चीले हो गए हैं। जो परिवार खर्च नहीं कर पाते हैं वे बच्चों को हीन-भावना से बचाने के लिए समूह में जाने से रोकते हैं।
4. आज की नई संस्कृति बच्चों को धूल-मिट्टी से बचना चाहती है।
5. घरों के बाहर पर्याप्त मैदान भी नहीं रहे, लोग स्वयं डिब्बों जैसे घरों में रहने लगे हैं।

प्रश्न 7. पाठ पढ़ते-पढ़ते आपको भी अपने माता-पिता का लाड़-प्यार याद आ रहा होगा। अपनी इन भावनाओं को डायरी में अंकित कीजिए।

उत्तर-

दिनांक – 13 अप्रैल 20….

दिन – ……..

स्थान – घर

प्रिय डायरी,

आज मैंने "माता का आँचल" पाठ पढ़ा। इसे पढ़ते-पढ़ते मुझे अपनी माँ और पापा का प्यार याद आ गया। जब मैं छोटा था, माँ मुझे बहुत प्यार से खाना खिलाती थीं और पापा हर छोटी-छोटी जरूरत का ध्यान रखते थे। माँ का आँचल मेरे लिए किसी छांव जैसा था, जिसमें मैं हर चिंता भूल जाता था।

आज भी जब मैं दुखी होता हूँ या थक जाता हूँ, माँ का एक मीठा सा प्यार भरा शब्द सारी थकान मिटा देता है। पापा का मजबूत सहारा हमेशा मुझे हिम्मत देता है। कभी-कभी जब माँ मुझे डाँटती हैं, तब भी उनके डाँट के पीछे उनका प्यार ही छुपा होता है।

"माता का आँचल" ने मुझे एहसास कराया कि माता-पिता का प्यार निस्वार्थ होता है और उनकी ममता की छांव हमेशा हमारे साथ रहती है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे माता-पिता हमेशा स्वस्थ और खुश रहें।

- [अपना नाम]

प्रश्न 8. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- पिता का अपने साथ शिशु को नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना, माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठाकर झूला झुलाना कितना मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है।

पिता के साथ कुश्ती लड़ना, बच्चे के गालों का चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा पूँछ पकड़ने पर बनावटी रोना रोने का नाटक और शिशु को हँस पड़ना अत्यंत जीवंत लगता है।

माँ के द्वारा गोरस-भात, तोता-मैना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना, शिशु का शृंगार करना और शिशु का सिसकना, बच्चों की टोली को देख सिसकना बंद कर विविध प्रकार के खेल खेलना और मूसन तिवारी को चिढ़ाना आदि अद्भुत दृश्य उकेरे गए हैं। ये सभी दृश्य अपने शैशव की याद दिलाते हैं।

egyanarchive

प्रश्न 9. माता का आँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर- इस पाठ के लिए माता का आँचल' शीर्षक उपयुक्त नहीं है। इसमें लेखक के शैशव की तीन विशेषताओं का वर्णन हुआ है

1. बच्चे का पिता के साथ लगाव
2. शैशव की मस्त क्रीड़ाएँ।
3. माँ का वात्सल्य
4. 'माता का आँचल' इन तीनों में से केवल अंतिम को ही व्यक्त करता है। अतः यह एकांगी और अधूरा शीर्षक है। इसका अन्य शीर्षक हो सकता है
5. मेरा शैशव
6. कोई लौटा दे मेरे रस-भरे दिन!

प्रश्न 10. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर- बच्चे अपने माता-पिता के प्रति प्रेम को कई तरीकों से व्यक्त करते हैं। वे छोटे-छोटे कामों से उन्हें खुशी देने की कोशिश करते हैं, जैसे पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करना, उनकी बातों को मानना, और उनकी मदद करना। बच्चे जब माता-पिता को गले लगाते हैं, उनका हाथ पकड़ते हैं या मुस्कुराकर उन्हें देखते हैं, तो भी उनका प्यार झलकता है।

कभी-कभी वे माता-पिता के लिए सुंदर चित्र बनाते हैं, कोई कार्ड तैयार करते हैं या प्यारे शब्दों में धन्यवाद कहते हैं। बच्चे माता-पिता की खुशी और आराम का ध्यान रखकर भी अपने प्रेम को व्यक्त करते हैं। सच तो यह है कि बच्चों के हर भोले और सच्चे व्यवहार में उनके माता-पिता के प्रति गहरा प्रेम छुपा होता है।

प्रश्न 11. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

उत्तर- हमारा बचपन इस पाठ में वर्णित बचपन से पूरी तरह भिन्न है। हमें अपने पिता का ऐसा लाड़ नहीं मिला। मेरे पिता प्रायः अपने काम में व्यस्त रहते हैं। प्रायः वे रात को थककर ऑफिस से आते हैं। वे आते ही खा-पीकर सो जाते हैं। वे मुझसे प्यार-भरी कुछ बातें जरूर करते हैं। मेरे लिए मिठाई, चाकलेट, खिलौने भी ले आते हैं। कभी-कभी स्कूटर पर बिठाकर घुमा भी आते हैं, किंतु मेरे खेलों में इस तरह रुचि नहीं लेते। वे हमें नंग-धडंग तो रहने ही नहीं देते। उन्हें मानो मुझे कपड़े से ढकने और सजाने का बेहद शौक है। मुझे बचपन में ए-एप्पल, सी-कैट रटाई गई। हर किसी को नमस्ते करनी सिखाई गई। दो ढाई साल की उम्र में मुझे स्कूल भेजने का प्रबंध किया गया। तीन साल के बाद मेरे जीवन से मस्ती गायब हो गई। मुझे मेरी मैडम, स्कूल-ड्रेस और स्कूल के काम की चिंता सताने लगी। तब से लेकर आज तक मैं 90% अंक लेने के चक्कर में अपनी मस्ती को अपने ही पाँवों के नीचे रौंदता चला आ रहा हूँ। मुझे हो-हुल्लड़ करने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। शायद मेरा बचपन बुढ़ापे में आए? या शायद मैं अपने बच्चों या पोतों के साथ खेल कर सकें।

egyanarchive

प्रश्न 12. फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन की आँचलिक रचनाओं को पढ़िए।

उत्तर-

1. फणीश्वरनाथ का उपन्यास 'मैला आँचल' पठनीय है।

   'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध उपन्यास है। यह कहानी एक छोटे से गाँव और वहाँ के लोगों के जीवन पर आधारित है। उपन्यास में गाँव की गरीबी, अज्ञानता, सामाजिक भेदभाव और किसानों की समस्याओं को बड़े ही सजीव ढंग से दिखाया गया है। इस कहानी में डॉक्टर प्रशांत जैसे कुछ अच्छे लोग गाँव में आते हैं, जो गाँववालों की सेवा करना चाहते हैं। डॉक्टर प्रशांत गाँव के बीमार और गरीब लोगों की निःस्वार्थ मदद करते हैं। दूसरी तरफ कुछ लोग लालच और स्वार्थ के कारण गाँव में बुराई फैलाते हैं। उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि किस तरह शिक्षा, स्वास्थ्य और जागरूकता के बिना गाँव पिछड़ जाते हैं। लेकिन उम्मीद की किरण यह है कि अच्छे लोग जैसे डॉक्टर प्रशांत गाँव में बदलाव लाने की कोशिश करते हैं। 'मैला आँचल' हमें सिखाता है कि सच्चे दिल से सेवा करने से समाज में बदलाव आ सकता है। यह पुस्तक गाँव के सरल जीवन, संघर्ष, प्रेम और करुणा की सच्ची तस्वीर पेश करती है।

2. नागार्जुन का उपन्यास 'बलचनमा' आँचलिक है।

   '**बलचनमा**' प्रसिद्ध लेखक **नागार्जुन** द्वारा लिखा गया एक सुंदर और सजीव **आंचलिक उपन्यास** है। इस कहानी का नायक एक साधारण गाँव का लड़का **बलचनमा** है, जो अपने जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करता है, लेकिन कभी हार नहीं मानता। बलचनमा एक गरीब किसान परिवार का लड़का है। उसके जीवन में गरीबी, भुखमरी, बीमारी और अन्य कठिनाइयाँ आती हैं। फिर भी, वह हमेशा हिम्मत से काम लेता है और अपने गाँव, अपने लोगों से गहरा प्रेम करता है। बलचनमा के माध्यम से नागार्जुन ने गाँवों की असली तस्वीर दिखाई है — जहाँ लोग अपनी छोटी-छोटी खुशियों और बड़े-बड़े दुखों के साथ जीते हैं। कहानी में खेत-खलिहान, त्योहार, लोकगीत, गरीबी, अंधविश्वास और किसान जीवन की झलक मिलती है। बलचनमा मेहनती है, ईमानदार है और बड़ों का आदर करता है। वह दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। 'बलचनमा' हमें यह सिखाता है कि चाहे हालात कितने भी कठिन हों, अगर मन में सच्चाई, मेहनत और धैर्य हो तो हर मुश्किल को पार किया जा सकता है।

egyanarchive